



## जनसंचार माध्यमों का बदलता स्वरूप और हिंदी



प्रा. डॉ. मोहन सावंत

मा. श्री. अण्णासाहेब डांगे कला, वाणिज्य व विज्ञान  
महाविद्यालय, हातकणंगलेजि. कोल्हापुर.

### विषय प्रवेश :-

समस्त प्राणी-जगत में मनुष्य को अत्यंत बुद्धिशाली प्राणी माना जाता है। मनुष्य अपने मस्तिष्क की प्रतिभा से विचार कर अपनी उन्नति करता है। अन्य प्राणियों से ज्यादा समझने की, शिक्षा की, जिज्ञासा की, खोज की अद्वितीयता उसमें है। इसी कारण मनुष्य ने भाषा और लिपि की खोज कर अपने विचारों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने की कला अवगत की है। आज इस संचार परंपरा ने तकनीकी स्वरूप प्राप्त कर लिया है। जिससे विश्व आज एक छोटे से गाँव में परिवर्तित हो गया है, ऐसा प्रतीत होता है।

**बीज शब्द** - जनसंचार, माध्यम, मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, 21 वीं सदी, हिंदी।

### प्रस्तावना-

'जनसंचार' शब्द में 'संचार' शब्द 'चार' के पूर्व सम उपसर्ग के योग से बना है, इसका तात्पर्य है - सम्यक ढंग से बढाना, फैलाना, चलाना अर्थात् विधिवत प्रचारित-प्रसारित होना। दंगल झाल्टे लिखते हैं - "जनसंचार" अंग्रेजी के शब्द का पर्यायी शब्द है। किसी वस्तु या विषय का सब के लिए साँझा होना। अतः उस प्रक्रिया को कहा जाएगा जिसके द्वारा किसी भाव, विचार अथवा जानकारी को हम दूसरों तक पहुँचाते हैं। जबवह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तो इसे जनसंचार कहते हैं।<sup>1</sup>

**अनुसंधान सामग्री-** कोश, संदर्भ ग्रंथ, पत्रिका, समाचार पत्र इ:-

### विमर्श -

आज के आधुनिक युग में हर जगह जनसंचार माध्यमों का महत्व बढ़ता ही जा रहा है। प्राचीन काल के जनसंचार के माध्यम और आज के माध्यमों में काफी बदलाव आया है। सूचना प्राप्त करने के लिए या जानकारी प्राप्त करने के हेतु मनुष्य आज तक भिन्न भिन्न माध्यमों का प्रयोग करता आ रहा है। प्राचीन काल में यह माध्यम अत्यंत दुरुह तथा जटिल था। आज जनसंचार माध्यमों को हम मुख्यतः तीन प्रकारों में बाँटकर उसमें आए हुए स्वरूप के बदलाव का अध्ययन कर सकते हैं।



### 1. मुद्रण माध्यम :- (प्रिंट मिडिया)

- पत्रिकाएँ
- पुस्तकें
- पंप्लेट्स

### 2. श्रव्य संचार माध्यम :-

- रेडियो
- ऑडियो कैसेट
- टेपरिकॉर्डर

### 3. दृश्य संचार माध्यम :-

- दूरदर्शन
- व्हिडियो कैसेट
- फिल्म

- कम्प्यूटर
- इंटरनेट

## ● विज्ञापन

### 1) मुद्रित माध्यम :-

भारत में मुद्रित माध्यमों का विकास 18 वीं शताब्दी के अंत में हुआ। आज देश के प्रत्येक प्रांत, क्षेत्र और भाषा में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। प्रतिवर्ष इसकी प्रसार संख्या में वृद्धि होती है।

वर्तमान समय में देश के प्रत्येक राज्य के महत्वपूर्ण शहरों से समाचार-पत्र प्रकट होते हैं। ज्ञान के विविध क्षेत्र (जैसे क्रीडा, विज्ञान, आरोग्य, फिल्म) इन समाचार पत्रों के विषय हैं। आजादी के पहले और आज के समाचार पत्रों में काफी बदलाव आ गया है। आज कुछ समाचार पत्र शाम को प्रकाशित होते हैं। जहाँ तक पत्र-पत्रिकाओं का सवाल है सबवह राजनीति, मनोरंजन, अध्यात्म, महिला, संस्कार, विज्ञान इन विषयों से जुड़ चुकी है। पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप विविध आयाम ले रहा है। पाठकों की रुचि और दृष्टिकोण के अनुसार इसमें बदलाव हो रहे हैं।

### 2) श्रव्य संचार माध्यम :-

श्रव्य संचार माध्यमों में रेडिओ महत्वपूर्ण साधन है। भारत में सन 1923 में रेडियो की शुरुवात हुई। स्वतंत्रता के समय केवल छह महानगरों में होनेवाले रेडियो स्टेशन की संख्या शुरुआत की है। इस संचार माध्यम ने आम आदमी की क्रयशक्ती के अनुसार बदलाव स्वीकार किया है। आज भारत के दो-तिहाई घरों तक यह माध्यम पहुँच गया है। टाकोर शैलेंद्रकुमार भारतीय रेडियों की स्थिति के बारे में लिखते हैं – “भारतीय स्थितियों में रेडियो एक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुआ है। यह असाक्षर लोगों तक भी पहुँचा। टेलिविजन एवं फिल्म से सस्ता होने के कारण भी वह लोकप्रिय हुआ।”<sup>2</sup> ओडियो कॅसेट और टेपरिकॉर्डर की जगह आज सीडी और डिव्हीडी प्लेअर ने ले ली है। सीडी यह अत्यंत सस्ता माध्यम होने के कारण आज बाजार में कई धार्मिक, शैक्षणिक मनोरंजनात्मक सीडीयों ने अपना एक अलग बाजार तैयार किया है।

### 3) दृश्य संचार माध्यम :-

दृश्य संचार माध्यम में दूरदर्शन एक प्रभावी माध्यम है। आज भारत में अनेक सेटेलाइट चैनल हैं। जो बहुउद्देश्य और बहुभाषीय हैं। टेलिविजन पर समाचार, खेलकूद, संगीत, शिक्षा, फिल्म आदि विभिन्न विषयों से संबंधित कई कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। लेकिन आज इस माध्यम पर मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों ने अपना हक जमा रखा है। इस कारण शिक्षा एवं सूचना देने का इसका प्रमुख दृष्टिकोण लुप्त होता नजर आ रहा है।

आज दूरदर्शन पर डी.टी.एच. प्रणाली उपलब्ध हो गयी है। इसकारण कार्यक्रमों का चुनाव हम कर सकते हैं। भारत में आज 50 प्रतिशत से भी जादा लोग रोज टेलीविजन देखते हैं। इसलिए व्यावसायिक विज्ञापनों की टेलीविजन पर भरमार है। शहरों के साथ-साथ गाँवों में भी आज यह माध्यम लोकप्रिय है। शिक्षा और सूचना प्रसारण के लिए इस माध्यम का उपयोग होना चाहिए। ज्ञान-विज्ञान, संस्कार, निती कथा के प्रचार और प्रसार के लिए हमें इस माध्यम का प्रयोग करना चाहिए।

आधुनिक युग में दूरदर्शन पर लाईव्ह प्रसारण का महत्व बढ़ रहा है। स्पीड के इस दौर में फटाफट खबरों की होड लगी है। डॉ. मनीष गोहिल के अनुसार – “ आज का दौर स्पीड का है। न्यूज चैनलें भी इसे जान गयी हैं। ज्यादातर न्यूज चैनल पर खबरे फटाफट, नॉनस्टॉप नाईन, पाँच मिनट में पच्चीस खबरे, न्यूज शतक, झटपट आदि शीर्षक से समाचारों को प्रसारित किया जा रहा है। इसमें थोड़े ही मिनटों में देश-दुनिया की खबरे प्रसारित की जाती हैं।”<sup>3</sup>

दूरदर्शन पर प्राईवेट न्यूज चैनल की संख्या बढ़ रही है। आज व्यापार उद्योग, फिल्म जगत, विज्ञान, कृषि, सभी क्षेत्रों के विकास के लिए यह माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जनसंचार के क्षेत्र में ‘फिल्म’ प्रचलित दृश्य – श्रव्य माध्यम है। पटेल चते ना बहन के मतानुसार – “आजकल हिंदी भाषा में विविध फिल्मों का प्रसारण भी होता है, इस फिल्मों में विविध समाज की जानकारी भी हमें देखने को मिलती है। देश में हो रहे भ्रष्टाचार, राजकारण की विविध बातें, शैक्षणिक जगत की बातें आदि सब कुछ हमें मनोरंजन के साथ फिल्मों में

देखने को मिलता है। आज के युग में सबसे जादा लोग यदि किस पसंद करते हैं। यह प्रश्न किया जाए तो उसका उत्तर मिलेगा, फिल्में।<sup>4</sup>

आज भारत में फिल्मों के द्वारा करोड़ों रूपयों का व्यापार हाते है। फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आज भारत विश्व में अब्बल है ठाकुर शैलेंद्रकुमार के मतानुसार –“आज भारत लगभग 1000 फिल्में प्रतिवर्ष निर्माण करनेवाला, विश्व का एक मात्र देश है।<sup>5</sup>

मनोरंजन के साथ-साथ पर्यावरण, पर्यटन नगर, उद्योग, मेला, लोग परंपराएँ, संरक्षण आदिवासी जीवन, विज्ञान आदि विषयों को लेकर शॉर्ट फिल्में बनायी जा रही है।

#### 4) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम :-

जनसंचार माध्यमों में नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में कम्प्यूटर और इंटरनेट का महत्वपूर्ण स्थान है। एक साथ कईकम्प्यूटर को जोडने काम इंटरनेट के माध्यम से होता है। आज सारा विश्व इस माध्यम से एकसाथ जुड गया है। कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क की भौति काम करता है पर इसकी गति अत्यंत तेज होती है। वर्तमान में विज्ञान, वाणिज्य, स्वास्थ्य, संगीत, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में कम्प्यूटर वरदान सिध्द हो चुका है।

इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में आज इंटरनेट सबसे प्रभावी और तेज माध्यम बन कर उभर आया है। रवींद्र शुक्ला के मतानुसार – “इंटरनेट” या सरल शब्दों में सिर्फ ‘नेट’ कम्प्यूटरों का जाडे नेवाले विभिन्न विश्वव्यापी सजं लों का महाजाल है। यह सूचना पाद्योगिकी का विशिष्ट अवदान भी है और उसका मूल आधार भी। टेलीफाने जैसी सचं र प्रणालियों से समागम (कन्वर्जेंस) के जरिए ‘इंटरनेट’ कम्प्यूटर संजालों का बृहद् संसार बनता है। आज समाज के लिए इंटरनेट जैसी ही आधारभूत जरूरत है। जैसे की सडकें टेलिफोन या विद्युत ऊर्जा।<sup>6</sup>

21 वी सदी में इंटरनेट ने हर क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया है। अखबार पत्र-पत्रिकाएँ, पोस्ट ऑफीस, सभी सरकारी कार्यालय, रेलवेस्टेशन, कृषि, शिक्षा, आरोग्य, मनोरंजन आज सभी जगह यह ज्ञान का महाकोष अपना रुदबा जमाएँ हू है। डॉ. दिलीप मेहरा के मतानुसार –“भारत में इंटरनेट का आगमन सन 1995 ई. में हुआ था। नवम्बर 1998 में ‘इंटरनेट सार्वेसा प्रोवाइडर’ के लिए इंटरनेट, व्यवसाय का विकास करने की अनुमती दी गयी। प्रारंभी में इसका लाभ लेनेवाले 7 लाख थे। 31 दिसंबर 2000 तक यह संख्या बढकर 18 लाख हो गयी। 31 जून 2001 इ. तक 120 से जादा आई. एस.पी. पूर्ण रूप से काम करने लग गये थे।<sup>7</sup>

#### जनसंचार माध्यमों में हिंदी :-

जनसंचार माध्यमों में हिंदी आज जन-जन की भाषा बन गयी है। जनसामान्य की उपयोगी सुचनाएँ खबरें देने के लिए सदियों से इस भाषा का प्रयोग हो रहा है। अखबार तथा पत्र पत्रिकाओं में हिंदी ने अपना बहुत विकास किया है। श्री बाबुभाई चौहान के मतानुसार –“नयी दिल्ली द्वारा वर्ष 2001 के अनुसार पंजीकृत पत्र-पत्रिकाओं की संख्या कुल 51,960 थी। आज अंतिम प्रकाशित सूचना के अनुसार यह संख्या 60,374 तथा हिंदी में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं की संख्या 24,000 दर्शायी गयी है।<sup>8</sup>

प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर विश्व मिडिया का भारी असर रहा है। इस कारण कई जगह हिंदी की भ्रष्टता के बारे में विदवानों ने चिंता व्यक्त की है- डॉ. मनोज गोहिल के मतानुसार – “कोई भी भाषा चाहे वह हिंदी हो या अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा, वह अपने समर्थतम रूप में प्रयोग में आनी चाहिए। भाषा के प्रति की गयी लापरवाही हमारी अस्मिता को खतरें में डालेगी ही व्यावहारिक जगत में भी हमें गुंगा बना देगी।<sup>9</sup>

आज जनसंचार माध्यमों में हिंदी का जो रूप हमें दिखायी देता है; उसे Hindi + English = Hinglish कहा जाता है। इस हिंग्लीश का प्रभाव इंटरनेट, कम्प्यूटर, मोबाईल टी.वी. सभी जगह देखा जा सकता है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में यह भाषिक मिलावट सबसे बडा चिंता का कारण है। अनुवाद का क्षेत्र हो, भाषायी शब्द संक्षिप्तियों सारी जगह भाषा का बिगडा रूप दिखाई देता है। हिंदी के महान पत्रकार सत्यदेव विद्यालंकार लिखते हैं-“हम लोग हिंदी न लिखकर अंग्रेजी हिंदी लिखते हैं। अंग्रेजी से अनुवाद करते समय दिमाग पर अंग्रेजी छाई रहना ठीक नहीं है। इसी से हिंदी में सौंदर्य और स्वाभाविकता नही आ पाती।<sup>10</sup>

मोबाईल और पत्र-पत्रिकाओं में, विज्ञापनों में भाषा का संमिश्र रूप हिंदी को विकृत कर रहा है। जैसे उसको आ जाने 2,13 मेरा 7, Please की जगह Plz, Your के स्थान पर ur है ' के स्थान पर H 'के' के स्थान पर k आदि।

वास्तविक रूप से विश्व स्तर अनेक देशों को हिंदी ने अपनी ओर आकर्षित किया है। इसका कारण यह भी है कि, भारत व्यापार का बहुत बड़ा क्षेत्र है। अन्य देशों का अपना कारोबार यहाँ चलाना है तो हिंदी के बगैर उन्हें कोई दूसरा उपाय नहीं है। बाजारीय दबाव के कारण ही मीडिया व इंटरनेट वेबसाइटों पर कारोबार खेल, विज्ञान आदि से जुड़ी जानकारी हिंदी भाषा में दी जाती है। माइक्रोसॉफ्ट, गुगल, सन, याहू, विंग आदि कई कंपनियों हिंदी के महत्व का पहचान चुकी है। यही कारण है कि आज विश्व में 87 करोड़ से भी अधिक हिंदी भाषी हैं।

हिंदी सिनेमा जगत ने तो इस क्षेत्र में अरबों रूपयों का उदयोंग फैलाया है। हम इस जगत को बॉलीवुड नाम से भी पहचानते हैं। आज इस क्षेत्र में हिंदी भाषा के कारण ही एक रोजगार का व्यापक क्षेत्र भी युवकों के सामने खुल गया है। देश के साथ विदेशों में भी हिंदी सिनेमा जगत बहुत मशहूर है। भारत सरकार भी वैश्विक मंच पर हिंदी को प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाने की कोशिश कर रही है। भारत सरकार के कई मंत्रालयों में हिंदी सॉफ्टवेयर उपकरणों का विकास किया जा रहा है। आज के जनसंचार का एक बहुआयामी स्वरूप प्राप्त हो रहा है। प्रशासन, शिक्षा, न्याय, चिकित्सा, तकनिक एवं जनसंचार माध्यमों में हिंदी को प्रयुक्त किया जा रहा है। आज लोगों का वाणिज्य, शिक्षा के कारण कई प्रदेशों के साथ देश विदेश आना जाना बढ़ रहा है। ऐसे हालात में हिंदी भाषा का व्यवहार में उपयोग भी बढ़ रहा है।

इस कारण जनसंचार माध्यमों में भी वह सक्षमता के साथ अपनी भूमिका निभा रही है। अंत में हम इतना ही कह सकते हैं कि हिंदी भाषा जनसंचार माध्यम का एक सक्षम माध्यम है। आनेवाले कल में बाजारीकरण के इस दौर में इसका दिनोंदिन और भी विकास होगा ऐसा मुझे विश्वास है। निष्कर्ष- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम निम्न निष्कर्ष तक पहुँचते हैं।

1. जनसंचार माध्यमों के मुख्यतः तीन प्रकार।
2. जनसंचार माध्यम के रूप में हिंदी अत्यंत अग्रसर भाषा के रूप में विकसित हो रही है।
3. हिंदी भाषा को हमें भाषाई मिलावट से दूर रखना है।
4. कार्यालयीन, वाणिज्यिक, कानूनी, वैज्ञानिक, विज्ञापन, जनसंचार सभी क्षेत्रों हिंदी भाषा अपनी अलग पहचान बना रही है।
5. भूमंडलीकरण के दौर में उसके स्वत्व की हमें रक्षा करनी चाहिए।
6. आज के वैश्वीकरण के युग में एक ग्लोबल संस्कृति का विकास हो रहा है।
7. जनसंचार माध्यमों में हिंदी का विकास और उसके मूल स्वरूप की रक्षा इन दोनों में संतुलन रखना आवश्यक है।
8. हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रीयता से जुड़ी हुई है अतः हिंदी का विकास ही राष्ट्र का विकास है।

#### संदर्भ :-

1. डॉ. जशवंत राठवा – मीडिया लेखन पृ 130
2. डॉ. जशवंत राठवा – मीडिया लेखन पृ 133
3. डॉ. जशवंत राठवा – मीडिया लेखन पृ 135
4. डॉ. मनिष गोहिल – मीडिया और हिंदी भाषा का स्वरूप पृ.66
5. डॉ. किर्तीकुमार जादव – जनसंचार माध्यम में हिंदी की स्थिति और दिशा – पृ. 128
6. डॉ. जशवंत राठवा – मीडिया लेखन पृ 135
7. डॉ. दिलीप मेहरा – दृश्य श्रव्य माध्यम- विविध परिप्रेक्ष्य पृ 65
8. डॉ. किर्तीकुमार जादव – जनसंचार माध्यम में हिंदी की स्थिति और दिशा – पृ. 94
9. डॉ. किर्तीकुमार जादव – जनसंचार माध्यम में हिंदी की स्थिति और दिशा – पृ. 23
10. डॉ. किर्तीकुमार जादव – जनसंचार माध्यम में हिंदी की स्थिति और दिशा – पृ. 39